SSC
EXAM

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

SSC-MTS
STAFF SELECTION COMMISSION
MULTITASKING STAFF

HANDWRITTEN NOTES

भाग - 1 सामान्य जागरूकता (GK)

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

SSC-MTS

& HAWALDAR

STAFF SELECTION COMMISSION

भाग - 1

सामान्य जागरूकता (GK)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**SSC MTS (Multitasking) & Havaldar**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है/ ये नोट्स पाठकों को **कर्मचारी चयन आयोग (SSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली "**SSC MTS (Multitasking) & Havaldar**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/6ypqrr

Online order करें - https://bit.ly/3li2feg

मूल्य :	**संस्करण : नवीनतम**

इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

1. सिन्धु सभ्यता 1

2. वैदिक सभ्यता 4

3. बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म 9

4. महाजनपद काल 14

5. मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल 19

6. गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल 23

7. प्रमुख राजवंश 27

8. कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश 46

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण 48

2. दिल्ली सल्तनत के प्रमुख राजवंश 50

3. भक्ति एवं सूफी आंदोलन 60

4. बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य 64

5. मुगल वंश (1526 - 1707 ई.) 67

आधुनिक भारत का इतिहास

1. यूरोपीय कम्पनियों का आगमन 76

2. मराठा साम्राज्य 81

3. अंग्रेजों की राजनीतिक एवं प्रशासनिक नीतियाँ 84

4. 1857 की क्रांति से पूर्व के जन आंदोलन 91

5. भारत में राष्ट्रीय जागरण या आंदोलन 95

6. गाँधी युग और असहयोग आंदोलन 99

7. क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक 106

भारतीय कला संस्कृति

1. भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य / नर्तक 109

2. भारतीय चित्रकला 111

3. भारतीय नृत्य कलाएँ 113

4. मुगलकालीन प्रमुख इमारतें 115

5. भारत के प्रमुख मंदिर 119

भारत का भूगोल

1. सामान्य परिचय 123
2. भौतिक विभाजन 125
3. भारत की नदियाँ एवं झीलें 130
4. भारत की जलवायु 136
5. भारत में कृषि 138
6. मृदा / मिट्टी 145
7. भारत की वनस्पतियाँ 148
8. भारत के राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य 151
9. प्रमुख खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 153
10. उद्योग (Industry) 158
11. परिवहन तंत्र 163
12. जनसंख्या :- वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या 168
13. जनजातियाँ 174

विश्व भूगोल 176 – 219

- ब्रह्माण्ड एवं सौरमंडल
- पृथ्वी की गतियाँ
- वायुमंडल
- अन्य महत्वपूर्ण वनलाइनर तथ्य
- महाद्वीप एवं महत्वपूर्ण स्थान
- पर्वत (Mountains) एवं पठार

भारत का संविधान

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	220
2. संविधान सभा	223
3. संविधान की विशेषताएं	225
4. भारतीय संविधान के स्त्रोत	228
5. भारतीय संविधान के भाग	229
6. संघ एवं इसका राज्य क्षेत्र	230
7. भारतीय नागरिकता	231
8. नीति निदेशक तत्व	232

९. मौलिक अधिकार	234
10. राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति	237
11. भारतीय संसद (विधायिका)	242
12. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद	248
13. उच्चतम न्यायालय	249
14. राज्य कार्यपालिका	251
15. मुख्यमंत्री, राज्य महाधिवक्ता, राज्य विधानमंडल	253
16. उच्च न्यायालय	259
17. पंचायती राज	262
18. निर्वाचन आयोग	267
19. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	268
20. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	269
21. नीति आयोग	270
22. संविधान संशोधन	271

अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. अर्थशास्त्र की मूलभूत अवधारणाएँ	272
2. राष्ट्रीय आय और उत्पाद	274
3. बजट एवं बजट निर्माण	275
4. मुद्रा एवं बैंकिंग	278
5. केंद्र सरकार की योजनाएँ	281
6. कर (TAX)	287
7. गरीबी एवं बेरोजगारी	288
8. स्टॉक एक्सचेंज एवं शेयर बाजार	291
9. भारत में आर्थिक नियोजन	297
10. आर्थिक समस्याएं एवं सरकार की पहले	298

विविध 304 - 372

- महत्वपूर्ण दिवस
- देशों की संसदों के नाम
- विश्व के प्रमुख देश, राजधानी एवं उनकी मुद्राएँ

- *पुस्तक एवं लेखक*
- *भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा*
- *विश्व में सबसे बड़ा छोटा, लम्बा तथा ऊँचा*
- *भारत में प्रथम पुरुष*
- *भारत में प्रथम महिला*
- *भारत का निम्न क्षेत्रों में प्रथम एवं द्वितीय स्थान*
- *भारत में विभिन पुरस्कार एवं सम्मानित व्यक्ति*
- *विश्व के प्रमुख संगठन और उनके मुख्यालय*
- *आविष्कार-आविष्कारक*
- *भारत के प्रमुख खेल*
- *राष्ट्रीय खेल पुरस्कार*
- *भारत में विश्व धरोहर स्थल*
- *भारत के राज्यों के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल*
- *केंद्र शासित प्रदेश*
- *भारत के राजकीय पशु, पक्षी, वृक्ष और फूल की सूची*
- *राज्यों की राजधानी और स्थापना दिवस*
- *राष्ट्रीय महिला नियुक्तियाँ*
- *अंतर्राष्ट्रीय महिला नियुक्तियाँ*

- *विश्व के प्रमुख कम्पनियों के सीईओ*
- *स्थलों /शहरों के परिवर्तित नाम*
- *भारतीय एयरलाइन्स एवं उनके प्रमुख*
- *भारत का नया मंत्रिमंडल*
- *पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी*

अध्याय – 3

बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म,

बौद्ध धर्म

- छठी शताब्दी ई.पू. में वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डों व आडम्बरों से ग्रसित हो गई।
- मध्य गंगा घाटी में इसी समय 62 सम्प्रदायों का उदय हुआ । उनमें जैन और बौद्ध सम्प्रदाय प्रमुख थे।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे ।
  सिद्धार्थ – बुद्ध का बचपन का नाम
  सिद्धि प्राप्त करने के लिए जन्म लेने वाला ।
- जन्म 563 ई.पू. – कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था । (नेपाल)
- कुल - शाक्य (क्षत्रिय कुल)
- बुद्ध की माता – महामाया थी । उनकी माँ की मृत्यु के
  बाद पालन पोषण महाप्रजापति गौतमी ने किया था ।
- पिता – शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया थे।
- बौद्धों की रामायण के नाम से प्रसिद्ध बुद्धचरित के रचनाकार अश्वघोष हैं ।
- 16 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध का विवाह-
  यशोधरा से हुआ इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- असित ब्राह्मण ने सिद्धार्थ क नामकरण किया था ।
- कालदेव तथा ब्राह्मण कौंडिन्य ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक चक्रवर्ती राजा अथवा सन्यासी होगा।
- बुद्ध के सारथी का नाम चाण तथा घोड़े का नाम कन्थक था , जो महात्मा बुद्ध को रथ द्वारा महल से कुछ दूर ले जाकर छोड़ आया ।
- बुद्ध के सबसे अधिक शिष्य कोसल राज्य में ही हुए तथा यहीं पर उन्होंने अपने धर्म का सबसे अधिक प्रचार किया ।
- संघ में प्रविष्ट होने को उपसंपदा कहा जाता है ।

महाभिनिष्क्रमण

- 29 वर्ष की आयु में सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था ।
- अनोमा नदी के तट पर सिर मुण्डन
- काषाय वस्त्र धारण किये ।
- प्रथम गुरु आलार कलाम थे ।
- सांख्य दर्शन के आचार्य
- बाद में उरुवेला (बोधगया) प्रस्थान
- उरुवेला में सिद्धार्थ को कौण्डिन्य, वप्पा, भादिया, महानामा, एवं अस्सामी नामक पांच साधक मिले । इनमें कौण्डिन्य प्रमुख थे ।

ज्ञान प्राप्ति –

- 35 वर्ष की आयु में – बोधगया में ज्ञान की प्राप्ति हुई । वैशाख पूर्णिमा को पीपल के वृक्ष के नीचे निरंजना नदी (पुनपुन) के तट पर ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- इसी दिन से गौतम बुद्ध तथागत कहलाये तथा गौतम बुद्ध नाम भी यहीं से हुआ। वह स्थान बोधगया कहलाया । जिसने सत्य को प्राप्त कर लिया।

धर्मचक्र प्रवर्तन-

- बुद्ध ने प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपतनम) में दिया जिसे बौद्ध ग्रन्थों में धर्मचक्रप्रवर्तन कहलाया ।
- बोधगया से सारनाथ आये
- प्रथम उपदेश दिया-5 ब्राह्मण सन्यासियों को
  मागधी भाषा में ।
- गौतम बुद्ध का बौद्ध संघ में प्रवेश हुआ ।
- सर्वप्रथम अनुयायी – तपस्स जाट शुद्र कालिक
- प्रिय शिष्य - आनन्द
  बौद्ध धर्म की प्रथम महिला भिक्षुणी - गौतमी (बुद्ध की मौसी

अन्तिम उपदेश

- कुशीनारा में सुभच्छ को दिया
- हिरण्यवती नदी तट पर

महापरिनिर्वाण (मृत्यु)

- कुशीनारा में 483 ई.पू.
- 80 वर्ष की आयु में
- बुद्ध के अवशेष 8 भागों में डाले गये जहाँ स्तूप बनाये गये।
- मल्लों ने अत्यन्त सम्मानपूर्वक बुद्ध का अंत्येष्टि संस्कार किया ।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है ।

वैशाख पूर्णिमा का महत्व

- वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं ।
- गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति
- महापरिनिर्वाण - वैशाख पूर्णिमा को
  अपवाद - महाभिनिष्क्रमण
- गौतम बुद्ध में 32 महापुरुषों के लक्षण बताये गये है।

बुद्ध के प्रमुख वचन

- जीवन कष्टों से भरा है।
- लिप्सा तृष्णा का ही दूसरा रूप है।

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

- बुद्ध , धम्म , संघ

बुद्ध के चार आर्य सत्य

1. दुःख
2. दुःख समुदाय
3. दुःख निरोध (निवारण)
4. प्रतिपदा

- इन्ही का कालान्तर में विस्तार होकर ये अष्टांगिक मार्ग कहलाये।

अष्टांगिक मार्ग

1. सम्यक दृष्टि
2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी
4. सम्यक कर्मान्त
5. सम्यक आजीव
6. सम्यक व्यायाम
7. सम्यक स्मृति
8. सम्यक समाधि

- समाधि मनुष्य के जीवन का परम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ।
- जीवन-मरण चक्र से मुक्ति

बुद्ध धर्म

- अनीश्वरवादी
- पुनर्जन्म में विश्वास
- अनात्मवादी धर्म

बौद्ध धर्म के प्रतीक

जन्म - कमल व साण्ड
गृहत्याग - घोड़ा
ज्ञान - पीपल (बोधि वृक्ष)
निर्वाण - पद-चिह्न
मृत्यु - स्तूप

- बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विस्तार कोशल राज्य में हुआ था ।
- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र – मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक - शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी ।
   सुत्तपिटक विनयपिटक
   (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)
   अध्यक्ष – महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
   वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
   अध्यक्ष – सर्वकामिनी
3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में - अशोक
   पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
   अभिधम्मपिटक
   (बुद्ध के दार्शनिक विचार)
   अध्यक्ष – मोग्गलिपुत्त तिस्स
4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क
   कुण्डलवन में हीनयान व महायान
   (कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)
   अध्यक्ष वसुमित्र /अश्वघोष था । चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया था हीनयान व महायान ।
   (कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा (पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये ।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री) ।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना ।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व है । बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलंभ करते है ।
- हीनयान का आदर्श अर्हत पद को प्राप्त करना है । जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते है उन्हें ही अर्हत कहा जाता है ।
- बौद्ध धर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक (विनयपिटक, सुत्रपिटक, अभिधम्भपिटक से प्राप्त होता है । इन तीनों पिटकों की भाषा पाली है ।
- पालि पिटक सबसे पुराना है ।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैंटोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है ।
- पालि त्रिपिटकों को पहली शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के शासक वत्तगामिनी की देख-रेख में पहलीबार लिपिबद्ध किया गया ।
- सूत्रपिटक के पांच निकाय हैं –दीर्घ, मज्झिम, संयुक्त, अगुंत्तर, खुद्दक,।
- बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी जातक कथाएँ खुद्दक निकाय की 15 पुस्तकों में से एक है। खुद्दक निकाय में धम्मपद (नैतिक उपदेशों का पधात्मक संकलन)थेरगाथा (बौद्ध भिक्षुओं का गीत)और थेरीगाथा (बौद्ध भिक्षुणियो की गीत)है ।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है । इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है ।
- त्रष्णा को क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है ।
- विश्व दुखों से भरा है का सिद्धान्त बुद्ध ने उपनिषद से लिया ।
- उपासकः गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनाने वालों को उपासक कहा गया है ।
- बौद्ध संघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु सीमा 15 वर्ष थी । बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने वाले को उपसम्पदा कहा जाता था ।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गंधार शैली के अंतर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अंतर्गत बनी थी ।
- भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी ।
- "विश्व दुखों से भरा है" का सिद्धांत बुद्ध ने उपनिषद् से लिया है ।
- गृहस्थ जीवन का त्याग प्रवज्या कहलाता था तथा प्रवज्या गृहण करने वाले को श्रामणेर कहा जाता था ।
- गृहस्थ जीवन रहकर ही बौद्ध धर्म को मानने वाले को उपासक कहा जाता था ।
- गौतम बुद्ध ने अपने सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये थे ।
- बौद्ध संघ का संगठन गणतंत्र प्रणाली पर आधारित था ।
- बुद्ध ने अपने उपदेशों में पालि भाषा का प्रयोग किया ।
- बौद्ध धर्म का प्रचार प्राकृत भाषा में किया गया ।
- सुतपिटक को प्रारम्भिक बौद्ध धर्म का इनसाइक्लोपिडिया कहा जाता है ।
- बौद्ध धर्म में पिटक का अर्थ – पिटारी अर्थात् ज्ञान की पिटारी से है ।
- भारत में पूजित पहली मानव प्रतिमा महात्मा बुद्ध की ही है ।
- बुद्ध के उपदेश यथार्थवाद की भावना से प्रेरित थे ।
- अनीश्वरवाद के संबंध बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में समानता है ।

भारत के महत्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य केन्द्र शासित प्रदेश
टाबो मठ	तबो गाँव (स्पीति घाटी)	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर

1. प्रयाग स्तम्भ लेख – कौशाम्बी में स्थित इस स्तम्भ लेख को अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित करवाया ।
2. दिल्ली –टोपरा स्तम्भ लेख – टोपरा में स्थित इस स्तम्भ लेख को फिरोजशाह तुगलक दिल्ली लाया ।
3. दिल्ली-मेरठ स्तम्भ लेख – मेरठ में स्थित इस स्तम्भ लेख को फिरोजशाह तुगलक दिल्ली लाया ।
4. रामपुरा स्तम्भ लेख – यह स्तम्भ लेख बिहार के चम्पारण में स्थित हैं ।
5. लौरिया अरेराज स्तम्भ लेख – यह स्तम्भ लेख बिहार के चम्पारण में स्थित हैं ।
6. लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भ लेख – यह स्तम्भ लेख बिहार के चम्पारण में स्थित हैं ।

अध्याय – 6

गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल

- मौर्य वंश के पतन के पश्चात् नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को हैं।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया हैं अग्रवालों के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण हैं ।
- गुप्त वैश्यों की उपाधि है। आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं ।
- गुप्त शासकों के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे जबकि गुप्त उनका उपनाम था। जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता है ।
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे । प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्क्रतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया है ।
- अग्रवालों की कुलदेवी माता लक्ष्मी है । गुप्त सम्राटों की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी है।
- गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़ियाँ कहलाया था।
- गुप्त कुषाणों के सामन्त थे ।

गुप्त वंश के शासक

श्रीगुप्त (240 ई. - 280 ई.)

- गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी शताब्दी के अंत में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था ।
- श्रीगुप्त का उल्लेख गुप्तवंश के "आदिराज" के रूप में प्रभावती गुप्त के पूना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में किया गया है । इत्सिंग के अनुसार श्रीगुप्त ने मगध के मृगवन शिखावन में एक मंदिर का निर्माण कराया था तथा मंदिर के खर्च हेतु चौबीस गाँवों को दान में दिया था ।

घटोत्कच (320)

- गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा। इसने 280 ई. से 320 ई. तक शासन किया।
- इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी। उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

चन्द्रगुप्त प्रथम (320-335 ई.)

- अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् 320 में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतन्त्र शासक था।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी । बाद में लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।

समुद्रगुप्त (335 -375)

प्रथम के बाद 335 ई. में उसका तथा कुमारदेवी का पुत्र **समुद्रगुप्त** राजगद्दी पर बैठा।

- सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में महानतम शासकों के रूप में वह नामित किया जाता है। इन्हें परक्रमांक कहा गया है।
- समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है। इस साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र थी। समुद्रगुप्त ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक असाधारण सैनिक योग्यता वाला महान विजित सम्राट था। विन्सेट स्मिथ ने इन्हें नेपोलियन की उपाधि दी।
- समुद्र गुप्त विष्णु का उपासक था ।
- उसका सबसे महत्वपूर्ण अभियान दक्षिण की तरफ़ (दक्षिणापथ) था। इसमें उसके बारह विजयों का उल्लेख मिलता है।
- उसका देहान्त 375 ई. में हुआ जिसके बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजा बना।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय इसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मंत्री नियुक्त किया था।
- हरिषेण, समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के सम्बन्ध में सटीक जानकारी प्राप्त होती है।
- काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चन्द्रप्रकाश' मिलता है।
- भारतीय इतिहास में समुद्रगुप्त को भारतीय नेपोलियन के नाम से जाना जाता है । समुद्रगुप्त को सौ युद्धों का विजेता माना जाता है ।
- समुद्रगुप्त को कविराज कहा गया है ।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से गया में एक बौद्ध मंदिर बनवाने के अनुमति माँगी थी ।

- **समुद्रगुप्त का साम्राज्य**- समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी से पश्चिम में पूर्वी मालवा तक विस्तृत था। कश्मीर,पश्चिमी पंजाब,पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध तथा गुजरात को छोड़कर समस्त उत्तर भारत इसमें सम्मिलित थे।
- परमभागवत की उपाधि धारण करने वाला प्रथम गुप्त शासक समुद्र गुप्त था ।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375 -415 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई. में सिंहासन पर आसीन हुआ। वह समुद्रगुप्त की प्रधान महिषी दत्तदेवी से हुआ था। वह विक्रमादित्य के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का अन्य नाम देव, देवगुप्त, देवराज, देवश्री आदि हैं।
- उसने विक्रमांक, विक्रमादित्य, परम भागवत आदि उपाधियाँ धारण की।
- उसने नागवंश, वाकाटक और कदम्ब राजवंश के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग राजकुमारी कुबेर नागा के साथ विवाह किया जिससे एक कन्या प्रभावती गुप्त पैदा हुई।
- वाकाटकों का सहयोग पाने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।
- कदम्ब राजवंश का शासन कुंतल (कर्नाटक) में था। चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब वंश में हुआ।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान ने 399 ईस्वी से 414 ईस्वी तक भारत की यात्रा की।
- उसने भारत का वर्णन एक सुखी और समृद्ध देश के रूप में किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल को स्वर्ण युग भी कहा गया है।
- शाब चन्द्रगुप्त द्वितीय का राज कवि था । चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में पाटलिपुत्र एवं उज्जयनी विधा के प्रमुख केंद्र थे ।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में उसकी प्रथम राजधानी पाटलिपुत्र और द्वितीय राजधानी उज्जयिनी थी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल कला-साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता है। उसके दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय प्राप्त था।
- उसके दरबार में नौ रत्न थे- कालिदास, धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेताल भट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर, वररुचि, आर्यभट्ट, विशाखदत्त, शूद्रक, ब्रह्मगुप्त, विष्णुशर्मा और भास्कराचार्य उल्लेखनीय थे। ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्मसिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसे

- इस मंदिर के परिसर में संस्कृत विद्यालय भी खोला गया।
- भोज ने चितौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर का निर्माण करवाया।
- परमार वंश के बाद तोमर वंश उसके बाद चाहमान वंश और अन्तत 1297 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति नसरत खाँ और उलूग खाँ ने मालवा पर आधिकार कर लिया।

- **सेन वंश**

- **सेन वंश:** सेन वंश एक प्राचीन भारतीय राजवंश का नाम था, जिसने 12वीं शताब्दी के मध्य से बंगाल पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। सेन राजवंश ने बंगाल पर 160 वर्ष राज किया। इस वंश का मूलस्थान कर्णाटक था।
- सेन वंश का संस्थापक सामंत सेन था। सेन वंश की स्थापना राढ़ में हुई थी। इसका शासन काल 1070–1095 ई. है।
- इसकी राजधानी नदिया (लखनौती) थी।
- सेन वंश का पराक्रमी शासक विजयसेन था जो शैव धर्म का अनुयायी था। विजय सेन का उत्तराधिकारी बल्लालसेन और बल्लाल सेन का उतराधिकारी लक्ष्मण सेन था।
- बल्लाल सेन बंगाल के सेन राजवंश के (1158-79 ई.) प्रमुख शासक थे। बल्लाल सेन उसने उत्तरी बंगाल पर विजय प्राप्त की और मगध के पाल वंश का अंत कर दिया और विजय सेन उत्तराधिकारी बन गए 'लघुभारत' एवं 'वल्लालचरित' ग्रंथ के उल्लेख से प्रमाणित होता है कि वल्लाल का अधिकार मिथिला और उत्तरी बिहार पर था।
- लक्ष्मण सेन के दरबार में "गीत गोविन्द " के रचयिता जयदेव तथा हल्लायुद्ध एवं पवनदूतम के रचियता धोई रहते थे।
- हल्ला युद्ध लक्ष्मण सेन का प्रधान न्यायाधीश एवं मुख्यमंत्री था। लक्ष्मण सेन के बाद विश्वरूप सेन तथा केशव सेन राजा बने।
- 1202 ई. में इख्तयारुद्दीन मुहम्मद -बिन बख्तियार ने लक्ष्मण सेन की राजधानी लखनौती पर आक्रमण कर उसे नष्ट कर दिया।

सेन राजवंश प्रथम राजवंश था जिसने अपना अभिलेख सर्वप्रथम हिंदी में उत्कीर्ण करवाया था। लक्ष्मण सेन बंगाल का अंतिम हिन्दू शासक था। इसने देवपाड़ा में प्रद्युमनेश्वर मंदिर (शिव का विशाल मंदिर) की स्थापना की।

अध्याय – 8

कुषाण वंश एवं सातवाहन राजवंश

- **कुषाण वंश**

- मौर्योत्तरकालीन विदेशी आक्रमणकारियों में कुषाण वंश सबसे महत्वपूर्ण है। पल्लवों के बाद भारतीय क्षेत्र में कुषाण आये जिन्हें युची और तोखरी भी कहा जाता है।
- कुषाणों ने सर्व प्रथम बैक्ट्रिया और उत्तरी अफगानिस्तान पर अपना शासन स्थापित किया।
- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसेस था।
- इसने तांम्बे का सिक्का चलाया था। सिक्कों के एक भाग पर यवन शासक हर्मियस का नाम उल्लेखित है तथा दूसरे भाग पर कुजुल का नाम खरोष्ठी लिपि में खुदा हुआ है।
- कुजुल कडफिसेज के बाद विम कडफिसेज शासक बना जिसने सर्वप्रथम सोने का सिक्का जारी किया। इसके अतिरिक्त कुषाणों ने प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाने के साथ ही उत्तरी पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में तांम्बे के सिक्के भी जारी किये।
- इसके सिक्कों पर शिव नंदी तथा त्रिशूल की आकृति एवं महेश्वर की उपाधि उत्कीर्ण हैं।
- विम कडफिसेज के बाद कनिष्क ने कुषाण साम्राज्य की सत्ता संभाली कनिष्क कुषाण वंश का महानतम शासक था। इसके कार्य काल का आरम्भ 78 ई. माना जाता है। क्योंकि इसी ने 78 ई. में शक संवत् आरंम्भ किया।
- उसने कश्मीर को विजित कर वहां कनिष्कपुर नामक नगर बसाया।
- कनिष्क बौद्ध धर्म की महायान शाखा का संरक्षक था। इसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है।
- कनिष्क ने कश्मीर में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- उसका उत्तराधिकारी हुविष्क था। हुविष्क के पश्चात् कनिष्क द्वितीय शासक बना जिसने सीजर की उपाधि ग्रहण की।
- कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था। जिसने अपना नाम भारतीय पर रख लिया। इसके सिक्को पर शिव के साथ गज की आकृति मिली है।
- कनिष्क के सारनाथ बौद्ध अभिलेख की तिथि 81 ई. सन् हैं। यह इसके राज्यारोहण के तीसरे वर्ष स्थापित की गई थी।

कुजुल कडफिसेस

- **मुख्य लेख : कुजुल कडफिसेस**
- कुषाणों के एक सरदार का नाम कुजुल कडफिसेस था । उसने क़ाबुल और कंधार पर अधिकार कर लिया ।
- मथुरा में इस शासक के तांबे के कुछ सिक्के प्राप्त हुए हैं ।

विम कडफिसेस

- **मुख्य लेख : विम कडफिसेस**
- विम तक्षम लगभग 60 ई. से 105 ई. के समय में शासक हुआ होगा।

कनिष्क

- **मुख्य लेख : कनिष्क**
- कनिष्क कुषाण वंश का सबसे प्रमुख या प्रसिद्ध सम्राट था । भारतीय इतिहास में अपनी विजय, धार्मिक प्रवृत्ति, साहित्य तथा कला का प्रेमी होने के नाते विशेष स्थान रखता है।
- कनिष्क की कश्मीर विजय का उल्लेख राजतरंगिणी नामक ग्रन्थ में मिलता है । कश्मीर में कनिष्कपुर नामक नगर को कनिष्क ने बसाया ।
- कनिष्क के दरबार में महान दार्शनिक एवं वैज्ञानिक नागार्जुन की तुलना मार्टिन लूथर से की जाती है ।
- नागार्जुन को भारत का आइन्स्टाइन कहा जाता है । नागार्जुन ने अपनी पुस्तक 'माध्यमिक सूत्र' में सापेक्षता के सिद्धान्त को प्रस्तुत किया है ।
- शून्यवाद के व्याख्याकार नागार्जुन थे ।
- कनिष्क के राजवेद आयुर्वेद के महापण्डित चरक थे । चरक ने औषधि पर चरकसहिंता नामक ग्रन्थ की रचना की ।
- बौद्ध धर्म के विश्वकोष 'महाविभासुत्र' की रचना वसुमित्र ने की थी ।
- कनिष्क के युग में गंधार कला , सरनाथ कला , मथुरा कला , तथा अमरावती कला का विकास हुआ । गंधार शैली में बौद्ध मूर्तियों का निर्माण हुआ था ।
- रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे । कुषाण साम्राज्य में मार्गों पर सुरक्षा का प्रबंध था । रेशम मार्ग का आरम्भ कनिष्क ने करवाया था ।
- कुषाण काल में सबसे अधिक विकास वास्तु कला के क्षेत्र में हुआ था । इसी काल में बुद्ध की खड़ी प्रतिमा का निर्माण हुआ था ।

कनिष्क के शासन काल के विद्वान

1	अश्वघोष	कवि / साहित्यकार
2	नागार्जुन	दार्शनिक वैज्ञानिक
3	चरक	चिकित्सक
4	वसुमित्र	बौद्ध / साहित्यकार

कनिष्क के शासनकाल में लिखीत पुस्तकें

क्र.स.	**पुस्तकें**	**लेखक**
1	बुद्धचरित	अश्वघोष
2	सुत्रालंकार	अश्वघोष
3	सौन्दरानन्द	अश्वघोष
4	माध्यमिकसूत्र	नागार्जुन
5	महाविभाषसूत्र	वसुमित्र
6	चरक सहिंता	चरक

सातवाहन राजवंश

- 'सातवाहन' शब्द का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में है । इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं । कथा सरितसागर में 'सात' नामक यक्ष पर चढ़ने वाले को सातवाहन कहा गया है।

आन्ध्र-सातवाहन वंश के शासक

शिमुक

- पुराणों के प्रमाण के अनुसार 28 ई.पू. शिमुक (या शिमुक या सिन्धुक) नामक आन्ध्र ने (जो सम्भवतः कण्व शक्ति का नायक या सेनापति था) ने कण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मन की हत्या करके सत्ता हथिया ली ।

कृष्ण

- पुराणों के अनुसार शिमुक का उत्तराधिकारी उसका भाई कृष्ण (कन्ह) था जिसने 18 वर्ष तक राज किया। नासिक में मिले एक शिलालेख में उसका नाम मिलता है।

शातकर्णी

- कृष्ण के बाद शिमुक का पुत्र शातकर्णी सिहांसन पर बैठा । वह एक महान विजेता और अपने वंश का प्रतापी शासक था । अनेक स्रोतों से उसके बारे में हमें पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।
- वीर चरित नाम के बौद्ध ग्रन्थ में उसका वर्णन प्रतिष्ठान के शासक के रूप में किया गया है ।
- उसने महाराष्ट्र के महारथी त्रणकयिरों की कन्या **नागनिका** से विवाह कर अपना प्रभाव बढ़ाया । उसके दक्षिणापथ के अनेक प्रदेशों को

अध्याय – 5

मुगल वंश (1526 - 1707 ई.)

बाबर से औरंगजेब तक

बाबर (1526 – 1530 ई.)

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया।
- लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की- दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलट कर दिया।
- बाबर ने मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी ।
- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था, अधिकतर मुगल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे मुगल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।
- बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज़्बेकिस्तान का हिस्सा है।
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था ।
- पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई
- खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।
- घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई ।

नोट -पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया था ।

- उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे । जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था ।
- पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर का भारत पर उसके द्वारा किया गया पांचवा आक्रमण था, जिसमें उसने इब्राहिम लोदी को हराकर विजय प्राप्त की थी और मुग़ल साम्राज्य की स्थापना की थी।
- बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था । भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था ।
- पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।
- पानीपत के युद्ध में विजय की खुशी में बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी को एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था। अपनी इसी उदारता के कारण बाबर को 'कलन्दर' भी कहा जाता था।
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों को सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर अपने आपको 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।
- पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था।
- खानवा विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की थी। इस युद्ध के लिए अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।
- खानवा के युद्ध में मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी, यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुके बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- बाबरनामा में बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है। जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेबरिज द्वारा किया गया है।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।

साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।

- बाबर ने 'रिसाल ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है।
- बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में 'आरामबाग-' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है। यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।
- बाबर को मुबइयान नामक पद्य शैली का जन्म दाता माना जाता है ।
- बाबर को उदारता के कारण कलन्दर की उपाधि दी गयी थी ।
- बाबर प्रसिद्ध नक्शबंदी सूफी ख्वाजा उबेदुल्ला अरहार का अनुयायी था ।
- बाबर के चार पुत्र हिन्दाल, कामरान, अस्करी और हुमायूँ थे। जिनमें हुमायूँ सबसे बड़ा था फलस्वरूप बाबर की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ अगला मुग़ल शासक बना।
- पित्रादुरा तकनीक का प्रयोग एत्मादुद्दौला के मकबरे में हुआ है जो ईरानी शैली का है ।

हुमायूँ (1530 ई-1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुगल वंश के शासन (गद्दी) पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- हुमायूँ के सबसे बड़े शत्रु अफगान थे, क्योंकि वे बाबर के समय से ही मुगलों को भारत से बाहर खदेड़ने के लिए प्रयत्नशील थे।
- हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खाँ था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।
- हुमायूँ का अफगानों से पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया' नामक स्थान पर हुआ। इसमें अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।
- 1532 ई. में हुमायूँ ने शेर खाँ के चुनार किले पर घेरा डाला। इस अभियान में शेर खाँ ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार कर ली
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- चारबाग पद्धति का प्रयोग पहली बार हुमायूँ के मकबरे में हुआ जबकि भारत में पहला बाग युक्त मकबरा सिकन्दर लोदी का था ।
- हुमायूँ के मकबरे को ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है ।
- स्वर्ण सिक्का जारी करने वाला प्रथम मुगल शासक हुमायूँ था ।
- हुमायूँ ने 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खाँ की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया । बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खाँ ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1544 में हुमायूँ ईरान के शाह तहमस्प के यहाँ शरण लेकर पुनः युद्ध की तैयारी में लग गया ।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 को पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"
- बैरम खाँ हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासन् तथा पुनः राजसिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।
- हुमायूँनामा की रचना गुलबदन बेगम नी की थी ।

• 1857 की महान क्रांति

- 1856 में अंग्रेजों ने पुरानी बन्दुक ब्राउन बेस के स्थान पर नई एनफील्ड रायफल को प्रयोग करने का निर्णय लिया। उसके लिए जो कारतूस बंनाये गए उन्हें रायफल में भरने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था ।
- इन कारतूसो में गाय और सूअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था ।
- यह चर्बी वाले कारतूस ही 1857 की क्रांति के प्रमुख कारण बना ।
- 1857 की क्रांति में भाग लेने वाले सर्वाधिक सैनिक अवध राज्य से थे ।
- 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री पामर्स्टन थे ।
- 29 मार्च 1857 ई. को मंगल पांडे नामक एक सैनिक ने बैरकपुर में गाय की चर्बी मिले हुए कारतूसों को मुंह से काटने से स्पष्ट मना कर दिया था । फलस्वरूप उसे गिरफ्तार कर 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गई । मंगल पांडे का सम्बन्ध 34 वी बंगाल नेटिव इन्फेंट्री से था ।
- 10 मई 1857 के दिन मेरठ की पैदल टुकड़ी 20 N.I. से 1857 ई. की क्रांति की शुरुआत हुई ।
- 1857 ई. में क्रांति के समय भारत का गवर्नर लॉर्ड कैनिंग एवं इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री पोर्मस्टेन (लिबरल) थे ।
- **नोट :** अंग्रेजी भारतीय सेना का निर्माण 1748 ई. में आरंभ हुआ । उस समय मेजर स्ट्रिंजर लॉरेंस को अंग्रेजी भारतीय सेना का जनक पुकारा गया ।
- 34वीं रेजीमेंट के सिपाही मंगल पांडे ने बैरकपुर नामक स्थान से विद्रोह किया था ।
- रानी लक्ष्मी बाई को अंतिम युद्ध में कैप्टन ह्यूरोज ने पराजित किया था ।
- लॉर्ड कैनिंग ने 1857 ई. में इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था ।
- लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने किया था ।
- वुड्स घोषणा पत्र 1854 भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है ।
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास लॉर्ड हार्डिंग के द्वारा किया गया था ।
- धन निष्कासन का सिद्धांत दादाभाई नौरोजी ने प्रतिपादित किया था ।
- कार्ल मार्क्स का विचार था कि भारत में ब्रिटिश आर्थिक नीति घिनौनी है ।
- स्थाई बंदोबस्त का सिद्धांत भू-राजस्व के निर्धारण से संबंधित हैं ।
- रैयतवाड़ी वह भू-राजस्व व्यवस्था है जो सर्वाधिक ब्रिटिश क्षेत्रों पर लागू की गई ।
- 1857 की क्रांति के असफलता के उपरांत सेना में अंग्रेजी सैनिकों और पदाधिकारियों की संख्या में वृद्धि की गयी । बंगाल की सेना में भारतीयों और अंग्रेज सैनिकों का अनुपात 2:1 का रखा गया । बम्बई और मद्रास की सेनाओं में यह अनुपात 5:2 का रखा गया।
- व्यपगत का सिद्धांत या राज्य हड़प नीति लॉर्ड डलहौजी के द्वारा लागु की गयी थी ।
- 1857 के मामले की जाँच हेतु पील कमीशन को नियुक्त किया गया था ।
- भारत में स्थायी स्वशासन का जनक लॉर्ड रिपन को माना जाता है ।
- गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल में भारत पर ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया था ।
- भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सरकारी इतिहासकार एस. एन. सेन थे ।
- 1857 ई. का विद्रोह एक राष्ट्रीय विद्रोह था यह मत बेंजामिन डिजरायली का था ।
- डब्ल्यू. टेलर और जेम्स आउट्रम ने 1857 की क्रांति के बारे में मत दिया की यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू मुसलमानों का षडयंत्र था ।
- रीज ने 1857 के विद्रोह के बारे में मत दिया की यह ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध था ।
- भारतीयों को सेना में ऊँचे से ऊँचा प्राप्त होने वाला पद सूबेदार का था ।
- ह्यूरोज ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा था की क्रांतिकारियों में वह एक अकेली मर्द थी ।

1857 की क्रांति के बारे में इतिहासकारों का मत

क्र. स.	मत	इतिहासकार
1.	यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था	वी.डी.सावरकर
2.	यह राष्ट्रीय विद्रोह था	डिजरायली
3.	यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था	सर जॉन लॉरेन्स एवं सीले
4.	यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू एवं मुसलमानों का षडयंत्र था	जेम्स आउटर्म डब्ल्यू. टेलर
5.	बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध था	टी.आर. होम्स

अध्याय – 3

भारतीय नृत्य कलाएँ

भरतनाट्यम

- भरतनाट्यम भारतीय नृत्य कला शैली का विकास तमिलनाडु में हुआ।
- भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से भारतीय नृत्य कला की इस शैली की जानकारी प्राप्त होती है।
- भरतनाट्यम का नाम भरतमुनि तथा नाट्यम शब्द से मिलकर बना है। तमिल में नाट्यम शब्द का अर्थ नृत्य होता है।
- नंदिकेश्वर द्वारा रचित अभिनय दर्पण भरतनाट्यम नृत्य में शरीर की गतिविधि के व्याकरण और तकनीकी अध्ययन के लिए ग्रंथीय सामग्री का एक प्रमुख स्त्रोत है।
- चिंदबरम मंदिर के गोपुरमों पर भरतनाट्यम नृत्य की भंगिमाओं की एक श्रृंखला और मूर्तिकार द्वारा पत्थर को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं देखी जा सकती हैं।
- भरतनाट्यम नृत्य को एकहार्य के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ नर्तकी एकल प्रस्तुति में अनेक भूमिकाएं करती हैं।
- राजा सरफोजी के संरक्षण के तहत तंजौर के प्रसिद्ध चार भाइयों ने भरतनाट्यम के उस रंगपटल का निर्माण किया था, जो हमें आज दिखाई देता है।
- देवदासियों द्वारा इस शैली को जीवित रखा गया। देवदासी वास्तव में वे युवतियां होती थी । जो अपने माता-पिता द्वारा मंदिर को दान में दे दी जाती थी। उनका विवाह देवताओं से होता था।
- देवदासियाँ मंदिर के प्रांगण में देवताओं को अर्पण के रूप में संगीत व नृत्य प्रस्तुत करती थीं। इस सदी के कुछ प्रसिद्ध गुरुओं और अनुपालकों का संबंध देवदासी परिवारों से है जिनमें बाला सरस्वती एक बहुत परिचित नाम है।

कथकली नृत्य

- कथकली नृत्य केरल का शास्त्रीय नृत्य है।
- चाकिदारकुत्त, कूडियाटृम कृष्णानाटृम और रामानाटृम केरल की कुछ अनुष्ठानिक निष्पादन कलाएं हैं, जिनका कथकली के प्रारूप और तकनीक पर सीधा प्रभाव है।
- कथकली नृत्य संगीत और अभिनय का वर्णन है। इसमें अधिकतर भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है।
- कथकती नृत्य में कर्नाटक रागों का भी प्रयोग होता है ।

कथक नृत्य

- कथक शब्द की उत्पत्ति कथा शब्द से हुई है, जिसका अर्थ एक कहानी से है।
- ब्रजभूमि की रासतीता से उत्पन्न कथक उत्तर प्रदेश की एक परंपरागत नृत्य विधा है।

प्रसिद्ध घराने

लखनऊ घराना

- 21वीं सदी में अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण के तहत भारतीय नृत्य कला के अंतर्गत कथक का स्वर्णिम युग देखने को मिलता है।
- नवाब ने लखनऊ घराने को अभिव्यक्ति तथा
- भाव पर उसके प्रभावशाली रूप से स्थापित किया।
- इस घराने के नृत्य पर मुगल प्रभाव के कारण नृत्य में श्रृंगारिकता के साथ-साथ अभिनय पक्ष पर भी विशेष ध्यान दिया।
- इस घराने को पहचान दिलाने में पंडित लच्छू महाराज, पंडित बिरजू महाराज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

जयपुर घराना

- जयपुर घराना अपनी लयकारी या लयात्मक प्रवीणता के लिए जाना जाता है। इस घराने के नृत्य के दौरान पाँव की तैयारी, अंग संचालन तथा नृत्य की गति पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- इसे शीर्ष पर पहुंचाने में उमा शर्मा, प्रेरणा श्री माली, शोभना नारायण, राजेन्द्र गंगानी और जगदीश गंगानी ने पर्याप्त योगदान दिया है।

बनारस घराना

इस घराने में श्रृंगारिकता के स्थान पर प्राचीन शैली पर अधिक बल दिया गया। यह जानकी प्रसाद के संरक्षण में विकसित हुआ। इस घराने के नाम पर प्रख्यात नृत्यगुरु सितारा देवी के पश्चात् उनकी पुत्री जयंतीमाला ने इसकी छवि को बनाये रखने का प्रयास किया।

रायगढ़ घराना

- अन्य सभी घरानों से नया माना जाता है। इसकी स्थापना रायगढ़ के महाराजा चक्रधर सिंह के आश्रय में पंडित जयलाल, पंडित सीताराम, हनुमान प्रसाद और लखनऊ घराने के पंडित अच्छन महाराज तथा पंडित लच्छू महाराज द्वारा की गयी। यह आघातपूर्ण संगीत पर बल देने हेतु महत्वपूर्ण है।

कुचिपुड़ी नृत्य

- कुचिपुड़ी आन्ध्र प्रदेश की एक नृत्य शैली है।
- यह भारतीय नृत्य की एक पारंपरिक शैली है। मूलतः कुस्सेल्वा के नाम से विख्यात ग्राम-ग्राम जाकर प्रस्तुति देने वाले अभिनेताओं के समूह के द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली विधा है। आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिलें में कुचिपुड़ी नामक गांव है।
- 17वीं शताब्दी में एक प्रतिभाशाली वैष्णव कवि तथा दृष्टा सिद्धेन्द्र योगी ने यक्षगान के रूप में कुचिपुड़ी शैली की कल्पना की, जिनमें अपनी कल्पनाओं को मूर्ति एवं साकार रूप प्रदान करने की अद्भुत क्षमता थी।
- सिद्धेन्द्र योगी के अनुयायियों अथवा शिष्यों ने कई नाटकों की रचना की और आज भी कुचिपुड़ी नृत्य-नाटक की परंपरा विद्यमान है।
- इस शैली में एकल नृत्य प्रस्तुति व स्त्री नर्तकियों के प्रशिक्षण सहित अनेक नए तत्वों समावेशन लक्ष्मी नारायण शास्त्री ने किया।
- पहले भी एकल नृत्य प्रस्तुति विद्यमान थी, पर वह केवल समुचित कार्यों में नृत्य-नाटकों के एक भाग के रूप में की थी।
- अब कुचिपुड़ी नृत्य की दो शैलियां है ।

1. नृत्य नाटक
2. एकल नृत्य नाटक

मोहिनीअट्टम

- मोहिनीअट्टम की शाब्दिक व्याख्या मोहिनी के नृत्य के रूप में की जाती है।
- हिन्दू पौराणिक गाथा की दिव्य मोहिनी केरल का शास्त्रीय एकल नृत्य-रूप है। मोहिनी अर्थात् सुन्दर नारी तथा अट्टम अर्थात् नृत्य है।
- यह नृत्य केवल स्त्रियों द्वारा निष्पादित किया जाता है।
- केरल के इस नृत्य की संरचना त्रवणकोर राजाओं महाराजा कार्तिक तिरुनल और उसके उत्तराधिकारी महाराजा स्वाति तिरुनल द्वारा वर्तमान शास्त्रीय स्वरूप में की गई थी।
- इसका उद्भव केरल के मंदिरों में हुआ।

ओडिसी नृत्य

- ओडिसा के इस नृत्य को पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर सबसे पुरातन जीवित शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक माना जाता है।
- इंद्रीय और गायन के रूप में ओडिसी प्रेम और भाव, 'देवताओं और मानव से जुड़ा सांसारिक और लोकोत्तर नृत्य है। दक्षिणी-पूर्वी शैली उधरा मगध शैली के रूप में जानी जाती है, जिसमें वर्तमान ओडिसी को प्राचीन अग्रदूत दूत के रूप में पहचाना जा सकता है।
- भुवनेश्वर के पास उदयगिरि और खण्डगिरि की गुफाओं से इस नृत्य रूप के दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के पुरातात्विक प्रमाण पाए जाते हैं।
- ओडिसी एक उच्च शैली का नृत्य है और कुछ मात्र में शास्त्रीय नाटक शास्त्र तथा अभिनय दर्पण पर आधारित है।
- जयदेव द्वारा रचित 12वीं सदी के गीत गोविन्द के बारे में सत्य है।

प्रमुख शास्त्रीय नृत्य एवं उसके कलाकार

भरतनाट्यम	यामिनी कृष्णमूर्ति, सोनल मान सिंह, रुक्मिणी देवी, अरुंडेल, टी.बाल सरस्वती पद्मा सुब्रह्मण्यम,एस.के.सरोज, रामगोपाल, लीला सैमसन, मृणालीनी साराभाई वैजयंतीमाला बाली, मालविका सरकार, प्रियदर्शनी गोविन्द
कुचिपुड़ी	यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मी नारायण शास्त्री, राधा रेड्डी, राजा रेड्डी, स्वप्नसुंदरी, वेदांतम सत्यनारायण वेमप्ति चेनासत्यम ।
ओडिशी	सयुक्त पर्णीग्रही, सोनल मान सिंह, किरण सहगल, माधवी मुद्गल, रानी कर्ण, कालीचरण पटनायक, इंद्राणी रहमान, शेरोन लोवेन (USA) मिर्ता बारवी (अर्जटीना)
कथकली	बल्लतोल नारायण मेनन, उदयशंकर, कृष्ण नायर, शांता राव, मृणालिनी साराभाई, आनन्द शिवरामन, कृष्ण कुट्टी आदि ।
कत्थक	बिरजू महाराज, लच्छु महाराज, सुखदेव महाराज, सितारादेवी, गोपीकृष्ण
मणिपुरी	गुरु अमली सिंह, आत्म्ब सिंह कलावती देवी
मोहिनीअट्टम	कल्याणी अम्मा, भारती शिवाजी, रागिनी देवी

अब्दुल कलाम द्वीप

- यह ओड़िशा के तट पर स्थित है
- इसका प्रयोग भारत अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम के परिक्षण के लिए करता है ।

माजुली द्वीप

- माजुली द्वीप दुनिया का सबसे बड़ा नदी द्वीप है ।
- जो असम के ब्रह्मपुत्र नदी के मध्य में है ।
- यह अपनी जैव विविधता के लिए जाना जाता है ।
- इस द्वीप को असम सरकार (2016) ने जिला घोषित किया है जिससे यह देश का पहला द्वीपीय जिला बन गया है ।

तटवर्ती मैदान

- भारत में तटीय मैदान पश्चिम घाट के पश्चिम तथा पूर्वी घाट के पूर्व में स्थित हैं ।
- यह तटों के सहारे- सहारे कच्छ की खाड़ी से लेकर पश्चिम बंगाल तक स्थित हैं ।
- भारत के तटीय मैदान लगभग 6000 km. की दूरी में स्थित हैं इनका निर्माण नदियों के द्वारा किया गया हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान पश्चिमी तटीय मैदान की अपेक्षा अधिक चौड़ा होता है ।
- पूर्वी घाट का अधिक चौड़ा होने का कारण नदियों के द्वारा डेल्टा का निर्माण करना है ।
- अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ ज्वारनदमुख का निर्माण करती हैं ।
- मालाबार तट पर लैगून झील पाए जाते हैं जिन्हें कयाल कहते हैं ।
- पूर्वी तटीय मैदान कृषि की दृष्टि से अधिक विकसित हैं ।
- तटीय मैदान को 2 भागो में विभाजित किया जा सकता है ।
- पश्चिमी तटीय मैदान
- पूर्वी तटीय मैदान

○ पश्चिमी तटीय मैदान में शामिल मैदान है

(a) गुजरात का तटीय मैदान

(b)कोंकण का तटीय मैदान

(c)कर्नाटक का तटीय मैदान

(d) मालाबार का तटीय मैदान

1. पूर्वी तटीय मैदान में शामिल मैदान है

a. उत्कल (ओड़िशा) का तटीय मैदान
b. आंध्र का तटीय मैदान
c. तमिलनाडु का तटीय मैदान
d. पश्चिमी तटीय मैदान

अध्याय – 3

भारत की नदियाँ एवं झीलें

- **नदियाँ**

भारतीय अपवाह तंत्र

अरब सागरीय अपवाह तंत्र | बंगाल की खाड़ी का अपवाह तंत्र

अपवाह तंत्र किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को कहते हैं ।

- कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 77 प्रतिशत भाग, जिसमें गंगा, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा आदि नदियाँ शामिल हैं । बंगाल की खाड़ी में जल विसर्जित करती हैं,
- जबकि 23% भाग जिसमें सिन्धु, नर्मदा, तापी, माही व पेरियार नदियाँ शामिल हैं । अपना जल अरब सागर में गिराती हैं ।

हिमालयी अपवाह तंत्र

- उत्तरी भारत की नदियाँ अपरदन से प्राप्त मिट्टी को बहाकर ले जाती हैं तथा मैदानी भागों में जल प्रवाह की गति मंद पड़ने पर मैदानों और समुद्रों में जमा कर देती हैं।
- इन्हीं नदियों द्वारा लायी गई मिट्टी से उत्तर भारत के विशाल मैदान का निर्माण हुआ है।
- इंडो ब्रह्म नदी:- भू-वैज्ञानिक मानते है, कि मायोसीन कल्प में लगभग 2.4 करोड़ से 50 लाखों वर्ष पहले एक विशाल नदी थी । जिसे शिवालिक या इंडो - ब्रह्म नदी कहा गया हैं ।
- इंडो ब्रह्म नदी के तीन मुख्य अपवाह तंत्र -
- 1.पश्चिम में सिन्धु और इसकी पाँच सहायक नदियाँ
- 2.मध्य में गंगा और हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ
- 3.पूर्व में ब्रह्मपुत्र का भाग व हिमालय से निकलने वाली इसकी सहायक नदियाँ

भारतीय नदी प्रणाली

1. सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु जल संधि 1960 में हुई थी ।
- तीन पूर्वी नदियों - व्यास, रावी, सतलज का नियंत्रण भारत के पास है । तथा 3 पश्चिमी नदियों सिन्धु, झेलम, चेनाब का नियंत्रण पाकिस्तान को दिया गया है ।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

1. व्यास, रावी, सतलुज — 80% पानी भारत, 20% पानी पाकिस्तान

2. सिन्धु, झेलम, चिनाब — 80% पानी पाकिस्तान, 20% पानी भारत

सिन्धु नदी तंत्र

- सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 11 लाख, 65 हजार वर्ग km हैं ।
- भारत में सिन्धु नदी का क्षेत्रफल 3,21,289 वर्ग किमी हैं ।
- सिन्धु नदी की कुल लम्बाई 2,880 किमी. है।
- भारत में सिन्धु नदी की लम्बाई केवल 1,114 km हैं ।
- भारत में यह हिमालय की नदियों में सबसे पश्चिमी नदी है ।
- सिन्धु नदी का उद्गम तिब्बती क्षेत्र में स्थित कैलाश पर्वत श्रेणी (मानसरोवर झील) में बोखर-चू के निकट एक चेमयांगडुंग ग्लेशियर (हिमनद) से होता है, जो 4,164 मीटर उँचाई पर स्थित हैं । तिब्बत में इसे शेर मुख कहते हैं ।

- **सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और झेलम सिन्धु नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं ।**
- अन्य सहायक नदियाँ – जास्कर, स्यांग, शिगार, गिलगिट, श्योक, हुंजा, कुर्रम, नुबरा, गास्टिंग व द्रास, गोमल ।
- सिन्धु नदी, कराची (पाकिस्तान) के निकट अरब सागर में जाकर गिरती हैं ।
- यह नदी अटक (पंजाब प्रांत, पाकिस्तान) के निकट पहाड़ियों से बाहर निकलती हैं । जहाँ दाहिने तट पर काबुल नदी इसमें मिलती है ।
- यह नदी दक्षिण की ओर बहती हुई मिठनकोट के निकट पंचनद का जल प्राप्त करती हैं ।
- पंचनद नाम पंजाब की पाँच मुख्य नदियों सतलज, व्यास, रावी, चिनाब, झेलम को संयुक्त रूप से दिया गया हैं ।
- सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियों का उद्गम स्थल तिब्बत का पठार हैं ।
- तिब्बत के पठार से निकलने वाली अन्य नदियाँ - यांग्त्सी - क्यांग, जियांग, ह्वांगहो (पीली नदी, पीत), इरावदी, मेकांग एवं सतलज ।
- जास्कर नदी का उद्गम हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर की सीमा पर सरचू के उच्च अक्षांशीय पठारी भाग से होता हैं ।
- यह नदी जास्कर श्रेणी में गहरे गॉर्ज का निर्माण करती है । तथा कठोर चट्टानी भागो से होकर बहती हैं ।
- यह पहले उत्तर फिर पूर्व की ओर बहते हुए नेमू के निकट सिन्धु नदी से मिल जाती हैं ।

सतलज नदी -

- यह एक पूर्ववर्ती नदी हैं ।
- यह तिब्बत में 4,555 मीटर की ऊँचाई पर मानसरोवर झील के निकट राक्षस ताल झील से निकलती हैं ।
- वहाँ इसे लाँगचेन खंबाब के नाम से जाना जाता है ।
- सतलज नदी का संगम स्थल कपूरथला के द.- प. सिरे पर व्यास नदी में तथा मिठानकोट के निकट सिन्धु नदी में है ।
- यह उत्तर - पश्चिम दिशा में बहते हुए इंडो - तिब्बत सीमा के समीप शिपकी ला दर्रे के पास भारत में प्रवेश करने से पहले लगभग 400 km तक सिन्धु नदी के समान्तर बहती है ।
- सतलज नदी की सहायक नदियाँ है –सिप्ती, वास्पा, व्यास
- यह हिमालय की श्रेणियों (महान हिमालय और जास्कर श्रेणी) को काटकर महाखड्ड का निर्माण करती हैं ।
- सतलुज, सिन्धु नदी की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी हैं । यह भाखड़ा नांगल परियोजना के नहर तंत्र का पोषण करती है तथा आगे जाकर व्यास नदी में मिल जाती हैं ।

व्यास नदी (विपाशा नदी) :-

- यह सिन्धु की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है ।
- यह रोहतांग दर्रे के निकट व्यास कुंड़ से निकलती हैं ।
- यह नदी कुल्लू घाटी से गुजरती है ।
- यह धौलाधर श्रेणी में काती और लारगी में महाखण्ड़ का निर्माण करती है ।
- यह हरिके बेराज के पास सतलज नदी में जाकर मिल जाती हैं ।
- पार्वती, सैन्ज, तीर्थन, ऊहल इसकी सहायक नदियाँ हैं ।

रावी नदी (परूष्णी नदी या इरावती नदी)

- यह नदी सिन्धु की महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है।
- जो हिमालय की कुल्लु की पहाड़ियों में स्थित रोहतांग दर्रे के पश्चिम से निकलती हैं तथा चंबा घाटी से होकर बहती हैं ।

प्रमुख फसलों के रोग व लक्षण रोग		
फसलें	रोग	लक्षण
1. चावल	ब्लास्ट	पत्तियों पर भूरे रंग के नाव की आकृति में चकते दिखाई पड़ते हैं।
2. गेहूँ	रतुआ	पत्तियों पर पीले, भूरे या काले रंग के धब्बे दिखाई पड़ते हैं।
3. गन्ना	लाल विगलन ग्राशी शूट	छोटे लाल रंग के धब्बे पत्ती की मध्य शिरा पर प्रकट होते हैं गन्ने का भीतरी भाग लाल हो जाता हैं सत से पतले - पतले अनेक फल्ले फुट निकलते हैं।
4. चना	उखटा	पत्तियाँ पीली पड़कर सुख जाती हैं, जड़े काली पड़कर गल जाती हैं
5. अरहर	तना बिगलन (स्टेन राट)	मिट्टी की सतह के पास तने पर भूरे या गहरे भूरे धब्बे उभर जाते हैं, तना कट जाता हैं और पौधे मर जाते हैं।

प्रमुख बहु - उद्देशीय परियोजनाएँ :-

परियोजना का नाम	नदी	लाभान्वित राज्य
भांगड़ा - नांगल	सतलज नदी	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान
नागार्जुन सागर	कृष्णा नदी	आंध्र प्रदेश
चंबल	चंबल नदी	राजस्थान ,मध्य प्रदेश
हीराकुंड बांध	महा नदी	ओडिशा
व्यास	व्यास नदी	राजस्थान पंजाब हरियाणा
दामोदर	दामोदर नदी	झारखण्ड, पश्चिम बंगाल
तवा	तवा नदी	मध्य प्रदेश
मालप्रभा	मालप्रभा नदी	कर्नाटक
नागपुर शक्तिग्रह	कोरडी नदी	महाराष्ट्र
काकड़ापारा	ताप्ती नदी	गुजरात
कोसी नदी	कोसी नदी	बिहार, नेपाल
तुंगभद्रा	तुंगभद्रा नदी	आंध्र प्रदेश,कर्नाटक
मयुरक्षी	मयुरक्षी नदी	पं. बंगाल
फरक्का	गंगा नदी	पं . बंगाल
गंडक	गंडक नदी	बिहार नेपाल
कुंडा	कुंडा नदी	तमिलनाडु
कोयना	कोयना नदी	महाराष्ट्र
टिहरी	भागीरथी नदी	उतराखंड
माताटीला	बेतवा नदी	उत्तर प्रदेश
भीमा परियोजना	पवना नदी	महाराष्ट्र

- भारत की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि – 24.80% (1961-71) में हुई ।
- 1911-21 के दशक में जनसंख्या में ह्रास की स्थित आयी, जिसका कारण अकाल एवं महामारियों का प्रकोप था।
- नगरीकरण की दृष्टि से भारत मध्यम-निम्न नगरीकृत देश है।
- जनसंख्या नियत्रण एवं परिवार नियोजन समवर्ती सूची का विषय हैं ।
- 2001 की जनगणना का कार्य जयत कुमार बंठिया के कार्यकाल में हुआ था।
- जनगणना-2011 के अनुसार देश में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले क्रमशः अरुणाचल प्रदेश और पुदुचेरी के कुरुंगकुम (111.01%) और यमन (77.15%) है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य (राजस्थान) है।
- सबसे बड़ा केन्द्रशासित प्रदेश अंडमान व निकोबार है।
- सबसे छोटो केन्द्रशासित प्रदेश (लक्षद्वीप) है।
- सबसे छोटा राज्य गोवा है।

शीर्ष जनसंख्या

	राज्य	**जनसंख्या (करोड़ में)**
	उत्तर प्रदेश	19.981(16-51%)
	महाराष्ट्र	11.237 (9.28%)
	बिहार	10.409 (8.60%)

जनसंख्या (केन्द्रशासित प्रदेश)

	केन्द्रशासित प्रदेश	**जनसंख्या (करोड़ में)**
	दिल्ली	1,67,87,941
	पुदुचेरी	12,47,953
	चण्डीगढ़	10,55,450

- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य (उत्तर प्रदेश) है।
- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा केन्द्रशासित प्रदेश (दिल्ली) है।
- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे केन्द्रशासित प्रदेश (लक्षद्वीप) है।
- जनसंख्या की दृष्टि से सबसे छोटा राज्य (सिक्किम) है।
- देश का प्राकृतिक संवृद्धि दर 14.4 है।
- शीर्ष प्राकृतिक संवृद्धि दर वाले चार राज्यों का क्रम इस प्रकार है- बिहार (21.0) > उत्तर प्रदेश (19.5) > राजस्थान (19.1) > मध्य प्रदेश (18.4)।
- न्यूनतम प्राकृतिक संवृद्धि दर वाले चार राज्यों का क्रम इस प्रकार है- गोवा (6.4) > केरल (7.8) > तमिलनाडु (8.3) > त्रिपुरा एवं पंजाब दोनों में (9.0)
- संघीय क्षेत्रों में शीर्ष और न्यनतम प्राकृतिक संवृद्धि दर क्रमशः दादर और नगर हवेली (31.0) तथा लक्षद्वीप (8.5) का है।
- शीर्ष मृत्यु दर वाले चार राज्य क्रमशः ओडिशा (8.4), मध्य प्रदेश (8.0), छत्तीसगढ़ (7.9), असम (7.8) है।
- न्यूनतम मृत्यु दर वाले चार राज्य क्रमशः नागालैण्ड (3.1), मणिपुर (4.0), दिल्ली (4.1) एवं मिजोरम (4.3) है।
- भारत में उच्चतम शिशु मृत्य दर वाले चार राज्य क्रमशः असम एवं मध्य प्रदेश दोनों में (54), ओडिशा (51) एवं उत्तर प्रदेश (50) है।
- न्यूनतम मृत्यु दर वाले चार राज्य क्रमशः गोवा (9) मणिपुर (10), केरल (12) एवं नागालैंड (18) है।
- जनसंख्या वृद्धि दर = संशोधित जन्म दर - संशोधित मृत्यु दर
- भारत में 15 वर्ष से 49 वर्ष के बीच की उम्र को प्रजनन काल कहा जाता है।
- वर्ष 2013 में सकल प्रजनन दर 2.3 था।
- राष्ट्रीय जन्म दर - 21.4 थी ।
- राष्ट्रीय जन्म-दर

क्र.स	**सर्वाधिक**	**न्यूनतम**
1.	बिहार (27.6%)	गोवा (13.0%)
2.	उत्तर प्रदेश (27.2%)	त्रिपुरा (13.7%)
3.	मध्य प्रदेश (26.3)	केरल (14.7%)

- जनसंख्या और संसाधन सम्बन्ध पर व्यवस्थित विचार प्रस्तुत करने का प्रथम श्रेय राबर्ट माल्थस को है।
- प्राकृतिक आधार पर आधारित जनसंख्या सिद्धान्त का प्रथम प्रतिपादक माल्थस था।
- सर्वाधिक साक्षरता - केरल (94.0%)
- सबसे कम साक्षरता - बिहार (61.8%)।
- सर्वाधिक साक्षरता वाला केन्द्रशासित प्रदेश- लक्षद्वीप (91.8%)
- सबसे कम साक्षरता वाला केन्द्रशासित प्रदेश - दादर व नगर हवेली (76.2%)
- 1951 में भारत की साक्षरता दर - 73% थी ।
- न्यूनतम जनसंख्या वृद्धि दर वाले जिले नागालैण्ड के लांगलेंग (-58.39%) एवं किफरे (-30.50%) हैं ।
- सर्वाधिक वृद्धि वाले राज्य/केन्द्रशासित राज्य दादरा व नगर हवेली (55.9%) और दमन व द्वीव (53.8%) हैं ।
- न्यूनतम जनसंख्या वाले दो जिले क्रमशः अरुणाचल प्रदेश के दिबांग घाटी (7948) और अंजाव (2108) हैं ।
- भारत में वर्ष 2001-2011 के बीच बने कुल नये जिले 47 थे ।
- विश्व क्षेत्रफल में भारत की हिस्सेदारी 2.4% हैं ।
- राष्ट्रीय जनसंख्या स्थिरता कोष की स्थापना फरवरी 2003 में की गई थी ।
- राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की स्थापना 11 मई, 2000 को की गई थी ।
- विश्व जनसंख्या दिवस 11 जुलाई को मनाया जाता हैं ।
- भारत में विकलांग जनसंख्या 2.21% हैं ।
- कुल विकलांग जनसंख्या में सर्वाधिक दृष्टि विकलांग 20.6% हैं ।
- न्यूनतम श्रवण विकलांग 5.8% हैं ।
- वर्ष 2011 की जनगणना में विकलांगों की सर्वाधिक संख्या उत्तर प्रदेश में थी।

लिंगानुपात

- देश का लिंगानुपात 943 है।
- 2001 की तुलना में 2011 की जनगणना के लिंगानुपात में 10 अंक का सुधार हुआ।
- 2011 में 0-6 वर्ष के बच्चों का लिंगानुपात राष्ट्रीय स्तर पर 919 है।
- वर्ष 2011 की जगनणना के अनुसार सर्वाधिक लिंगानुपात वाला राज्य केरल (1084) है।
- सबसे कम लिंगानुपात वाला राज्य हरियाणा (879) है।
- सर्वाधिक लिंगानुपात वाला केन्द्र शासित राज्य पुदुचेरी (1037) है।
- सबसे कम लिंगानुपात वाला केन्द्र शासित राज्य दमन एवं दीव (618) है।
- सर्वाधिक शिशु (0-6) लिंगानुपात वाला केन्द्रशासित राज्य अंडमान निकोबार द्वीप समूह (968) है।
- न्यूनतम शिशु (0-6) लिंगानुपात वाला राज्य हरियाणा (834) है।
- न्यूनतम शिशु (0-6) लिंगानुपात वाला केन्द्रशासित राज्य दिल्ली (871) है।
- जनगणना-2011 के अनुसार 2001 से 2011 के बीच में 0-6 वर्ष के लिंगानुपात में कमी -8 (927-919)।

भारत में लिंग संरचना

वर्ष	लिंगानुपात
1901	972
1951	946
2011	943

लिंगानुपात केन्द्र शासित प्रदेश

केन्द्रशासित प्रदेश	लिंगानुपात
पुदुचेरी	1037
लक्षद्वीप	947
अंडमान निकोबार	876

सर्वाधिक लिंगानुपात वाले दो जिले

1. माहे (पुदुचेरी) 1176
2. अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) 1139

न्यूनतम लिंगानुपात वाले दो जिले

1. दमन (दमन दीव) 533
2. लेह (जम्मू कश्मीर) 583

शीर्ष लिंगानुपात

	राज्य	लिंगानुपात
1.	केरल	1084
2.	तमिलनाडु	996
3.	आन्ध्रप्रदेश	993

- **वायुमंडल**

पृथ्वी के चारों ओर विस्तृत गैसीय आवरण को वायुमंडल कहते है। पृथ्वी पर स्थित वायुमंडल जैव व अजैव कारकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल की वजह से वायुमंडल पृथ्वी का एक अभिन्न अंग बन गया है। वायुमंडल सौर विकिरण की लघु तरंगों के लिए पारगम्य तथा पार्थिव तरंगो के लिए अपारगम्य माध्यम की भूमिका निभाता है।
इस प्रकार वायुमंडल ऊष्मा का अवशोषण कर पृथ्वी के औसत तापमान में संतुलन बनाए रखनें में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वायुमंडल में उपस्थित वायु रंगहीन, गंधहीन एवं स्वादहीन है। इसकी उपस्थिति का पता तभी चलता है जब यह पवन के रूप बहती है।
मांकहाउस के अनुसार-"वायुमंडल गैस की एक पतली परत है, जो गुरुत्वाकर्षण के कारण पृथ्वी के साथ लगी हुई है ।
क्रिचफिल्ड के अनुसार "वायुमंडल गैसों तथा वायु में उपस्थित तरल एवं ठोस पदार्थो का आवरण है, जो पृथ्वी को पूर्णतः घेरे हुए है।"

वायुमंडल की संरचना एवं संघटन

वायुमंडल में नाइट्रोजन 78 प्रतिशत, ऑक्सीजन 21 प्रतिशत, आर्गन 0.93 प्रतिशत, कार्बन डाई ऑक्साइड 0.03 प्रतिशत तथा हाइड्रोजन, हीलियम, ओज़ोन, निऑन, जेनान, आदि अल्प मात्रा में उपस्थित रहती हैं। नम वायुमंडल में जल वाष्प की मात्रा 5 प्रतिशत तक होती है।

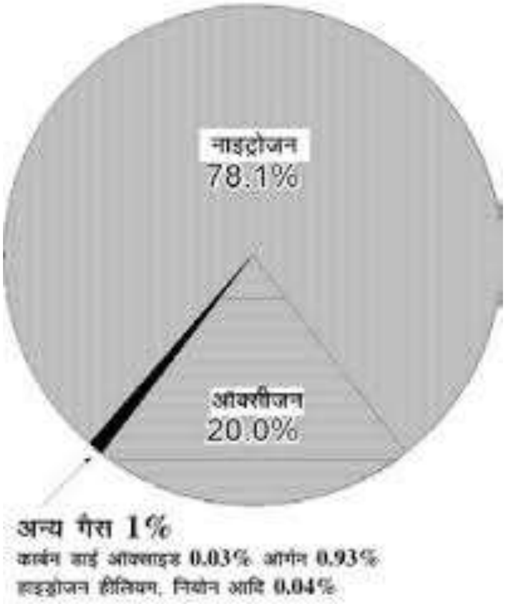

गैस	प्रतिशत आयतन
नाइट्रोजन	78.09
ऑक्सीजन	20.95
आर्गन	0.93
कार्बन डाइआक्साइड	0.03
निऑन	0.0018
हाइड्रोजन	0.001
हीलियम	0.000524
क्रिप्टन	0.0001
ज़ेनान	0.000008
ओज़ोन	0.000001
मीथेन	अल्प मात्रा

वायुमंडल में ओजोन परत की पृथ्वी पर सूर्य से आने वाली उच्च आवृत्ति की पराबैंगनी प्रकाश किरणों को अवशोषित कर लेती है, जो पृथ्वी पर जीवन के लिये हानिकारक है। ओजोन की परत की खोज 1913 में फ़्राँस के भौतिकविद् फ़ैबरी चार्ल्स और हेनरी बुसोन ने की थी।
वायुमंडल का घनत्व ऊंचाई के साथ-साथ घटता जाता है। वायुमंडल को 5 विभिन्न परतों में विभाजित किया गया है।

(1)क्षोभमंडल (2)समतापमंडल
(3)मध्यमंडल
(4)तापमंडल (5)बाह्यमंडल

क्षोभ मंडल (Troposphere)

यह वायुमंडल की सबसे नीचे वाली परत है।
क्षोभमंडल में जैसे जैसे ऊपर की ओर जाते है, वैसे तापमान में कमी होने लगती है।
ऊपर की ओर जाने पर प्रति 165 मीटर पर 10 तापमान कम होता है।

अध्याय – 16

उच्च न्यायालय

- भारत में कुल 24 उच्च न्यायालय है जिनका अधिकार क्षेत्र कोई राज्य विशेष या राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों के एक समूह होता हैं ।
- वर्तमान समय में पंजाब तथा हरियाणा के लिए एक ही उच्च न्यायालय है और असम, नागालैण्ड, मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम तथा अरुणाचल प्रदेश के लिए एक उच्च न्यायालय है ।
- मुम्बई उच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार महाराष्ट्र और गोवा राज्यों तथा दमन और दीव एवं दादरा और नागर हवेली संघ राज्य क्षेत्रों पर है ।
- इसी प्रकार कलकत्ता उच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, मद्रास उच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार पाण्डिचेरी तथा केरल उच्च न्यायालय का क्षेत्राधिकार लक्षद्वीप संघराज्य क्षेत्र पर है ।
- सात संघशासित राज्यों में से केवल दिल्ली ही एक ऐसा संघ राज्य क्षेत्र है , जिसका अपना उच्च न्यायालय है ।
- उच्च न्यायालय भारतीय संविधान के अनुच्छेद 214, अध्याय 5 व भाग 6 के अंतर्गत स्थापित किए गए हैं। न्यायिक प्रणाली के भाग के रूप में, उच्च न्यायालय राज्य विधायिकाओं और अधिकारी के संस्था से स्वतंत्र हैं ।
- उच्च न्यायालय, जिला न्यायालय के साथ, जो उनके अधीनस्थ होते हैं, राज्य के प्रमुख दीवानी न्यायालय होते हैं ।
- उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश और संबन्धित राज्य के राज्यपाल के साथ परामर्श के साथ होती हैं ।
- इसके अलावा, राष्ट्रपति परामर्श के बिना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश हस्तांतरण के अधिकार का प्रयोग कर सकते हैं।
- प्रत्येक उच्च न्यायालय का गठन एक मुख्य न्यायाधीश तथा ऐसे अन्य न्यायाधीशों को मिलाकर किया जाता है ,जिन्हें राष्ट्रपति समय-समय पर नियुक्त करे।

न्यायाधीशों की योग्यता

- अनुच्छेद 217 के अनुसार कोई व्यक्ति किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के योग्य तब होगा , जब वह
- भारत का नागरिक हो और 62 वर्ष की आयु पूरी न की हो ।
- कम से कम 10वर्ष तक न्यायिक पद धारण कर चुका हो । न्यायिक पद धारण करने की अवधि की गणना करने में वह अवधि भी सम्मिलित की जाएगी , जिसके दौरान कोई व्यक्ति पद्धारण करने के पश्चात्किसी उच्च न्यायालय का अधिवक्ता रहा है या उसने किसी अधिकरण के सदस्य का पद धारण किया है या संघ अथवा राज्य के अधीन कोई ऐसा पद धारण किया है , जिसके लिए विधि का विशेषज्ञान अपेक्षित है ।
- किसी उच्च न्यायालय में एक या से अधिक उच्च न्यायालयों में लगातार 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो ।
- किसी उच्च न्यायालय का अधिवक्ता रहने की अवधि की गणना करते समय वह अवधि भी सम्मिलित की जाएगी, जिसके दौरान किसी व्यक्ति ने अधिवक्ता होने के पश्चा न्यायिक पद धारण किया है या किसी अधिकरण के सदस्य का पद धारण किया है या संघ अथवा राज्य के अधीन कोई ऐसा पद धारण किया है, जिसके लिए विधिका विशेष ज्ञान अपेक्षित है ।

न्यायाधीशों की नियुक्त

- उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश से, उस राज्य के राज्य पाल से तथा सम्बन्धित उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श कर के की जाती है ।
- इस सम्बन्ध में यह प्रक्रिया अपनाई जाती है कि उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश राज्य के राज्यपाल के पास प्रस्ताव भेजता है और राज्यपाल उस प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री से परामर्श करके उसे प्रधानमंत्री के माध्य म से राष्ट्रपति के पास भेजता है ।
- राष्ट्रपति उस प्रस्ताव पर भारत के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श कर के न्यायाधीश की नियुक्ति करता है।
- उच्च न्यायालय के एक पूर्व निर्णय के अनुसार राष्ट्रपति मख्य न्यायाधीश की राय मानने के लिए बाध्य नहीं है । लेकिन 6 अक्टूबर, 1993 के उच्चतम न्यायालय के द्वारा दिये गये एक निर्णय के अनसार राष्ट्रपति को भारत के मुख्य न्यायाधीश की राय को वरीयता देनी चाहिए ।
- 1999 में उच्चतम न्यायालय के 9 सदस्यीय संविधान पीठ ने यह अभिनिर्धारित किया है कि उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में उच्चतम न्यायालय के केवल 2 वरिष्ठतम न्यायाधीशों की सलाह लेना आवश्यक है किन्तु

स्वच्छ भारत अभियान :-

- 2 अक्तूबर, 2014 को स्वच्छ भारत के अभियानं की शुरुआत की गई थी।
- इस अभियान के तहत व्यक्तिगत, सामूहिक और शौचालय का निर्माण किया जाएगा तथा ठोस और तरल कचरा प्रबंधन द्वारा सफाई की व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी।
- **वन रैंक वन पेंशन योजना :- 2006 से पहले** रिटायर हो चुके सैनिकों को वन रैंक वन पेंशन योजना से लाभ होगा।

- **प्रमुख योजनायें : एक नजर में**

योजनाएँ	**मंत्रालय**	**शुरुआत**
प्रधानमंत्री जन-धन योजना	ग्रह मंत्रालय	28अगस्त 2014
मेक इन इंडिया		25सितम्बर 2014
स्वच्छ भारत मिशन		`02अक्तूबर 2014
सांसद आदर्श ग्राम योजना	ग्रामीण विकास मंत्रालय	11 अक्तूबर2014
मिशन इंद्र धनुष योजना	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय	15 दिसम्बर 2014
हृदय योजना(HRIDAY)		21 जनवरी 2015
बेटी बचाओ-बेटी पढाओ योजना	महिला एवं बाल विकास मंत्रालय	22 जनवरी 2015
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना	वित्त मंत्रालय	8 अप्रैल 2015
प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना	वित्त मंत्रालय	9 मई 2015
अटल पेंशन योजना		9 मई 2015
प्रधान मंत्री आवास योजना	आवास एवं शहरी उपशमन	25 जून 2015
अमृत योजना(AMRUT)	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय	25 जून 2015
डिजिटल इंडिया मिशन		1 जुलाई 2015
स्किल इंडिया मिशन		15 जुलाई 2015
दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना		25 जुलाई 2015
भारतमाला परियोजना		31 जुलाई 2015
वन रैंक-वन पेशन योजना		7 नवम्बर योजना
स्टार्ट-अप इंडिया	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय	16 जनवरी 2016
सेतु भारतम परियोजना	केंद्रीय सड़क और परिवहन मंत्रालय	4 मार्च 2016
स्टेंडअप इंडिया	वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय	5 अप्रैल 2016
प्रधानमंत्री उज्जवला योजना	पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय	1 मई 2016
स्मार्ट सिटी मिशन		25 जून 2016
भीम एप (BHIM)		30 दिसम्बर 2016

मैक्सिको	मैक्सिको सिटी	पीसो
क्यूबा	हवाना	पीसो
ग्रीनलैंड	नुक (गड्थाब)	क्रोन
पनामा	पनामा सिटी	बाल्बोआ
बारबाडोस	ब्रिजटाउन	डॉलर
अलसल्वाडोर	सान सल्वाडोर	कोलन
हैती	पोटओ प्रिंस	गॉर्ड
जमैका	किंग्स्टन	डॉलर
त्रिनिदाद एंड टोबैगो	पोर्ट ऑफ़ स्पेन	डॉलर
दक्षिण अमेरिकी देश		
अर्जेंटीना	ब्यूनस आयर्स	पेसो
ब्राजील	ब्रासीलिया	क्रुजादो
चिली	सैंटियागो	पीसो
कोलम्बिया	बोगोटा	पीसो
फ्रेंच गुयाना	कोयेन्ने	यूरो
पैराग्वे	असुन्सियोन	गुआरानी
पेरू	लीमा	न्यवोसोल
उरुग्वे	मोंटेवीडियो	पीसो
वेनेजुएला	कराकस	बोलिवर
ओशिआनिया क्षेत्र के देश		
ऑस्ट्रेलिया	केनबरा	डॉलर
फिजी	सूवा	डॉलर
न्यूजीलैंड	वेलिंग्टन	डॉलर

- **पुस्तक एवं लेखक**

पुस्तक और उनके लेखक 2022

1. "लॉकडाउन लिरिक्स" नामक पुस्तक संयुक्ता दास ने लिखी है । इस पुस्तक में कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के दौरान के अनुभवों और परेशानियों पर लिखी गई कविताओं का संग्रह है ।
2. "द पॉवर ऑफ द बैलेट : ट्रवेल एंड ट्राइम्स इन द इलेक्शन्स की भूमिका सुनील अरोड़ा नए लिखी है । जबकि इस पुस्तक के लेखक उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता विपुल माहेश्वरी और पत्रकार अनिल माहेश्वरी है ।
3. पुस्तक "बियॉन्ड द मिस्टी वेइल" पुस्तक की लेखिका आराधना जौहरी है । यह पुस्तक देश विदेश में उत्तराखंड के दिव्य मंदिरों के प्रमाणिक परिचय देती है ।
4. "द मैकमोहन लाइन: ए सेंचुरी ऑफ डिस्कॉर्ड" नामक पुस्तक के लेखक जे जे सिंह हैं । इस पुस्तक के लेखक अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल और पूर्व सेनाध्यक्ष के पद पर जनरल जे जे सिंह रह चुके हैं । यह किताब भारत – चीन सीमा विवाद पर जनरल जे जे सिंह के अनुभवों और शोध पर आधारित है ।
5. "टॉम्ब ऑफ सैंड" नामक पुस्तक के लेखक गीतांजलि श्री है । गीतांजलि श्री को उनके उपन्यास "Tomb of Sand" के लिए साल 2022 का अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज दिया गया है । ऐसा पहली बार है कि जब किसी हिंदी उपन्यास के लिए किसी लेखिका को दुनिया के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय बुकर प्राइज से सम्मानित किया गया है । यह भारत के लिए बड़े गर्व की बात है । लेखिका और साहित्यकार गीतांजलि श्री का यह उपन्यास मूल रूप से हिंदी में "रेत समाधि " के नाम से प्रकाशित हुई थी और इसका अंग्रजी अनुवाद "Tomb of Sand" नाम से डेजी रॉकवेल ने किया है ।
6. क्रंच टाइम : नरेंद्र मोदीज नेशनल सिक्योरिटी क्राइसिस पुस्तक के लेखक श्रीराम चौलिया है । यह पुस्तक चीन और पाकिस्तान के साथ संकट के दौरान पीएम मोदी की निर्णय लेने की श्रृंखला का विश्लेषण करती है ।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

7. हिंदी कविता संग्रह "मैं तो यहां हूं" के लेखक प्रो. रामदरश मिश्र हैं। हिंदी के विरिष्ठ कवि एवं लेखक "प्रो. रामदरश मिश्र " मिश्र को वर्ष 2021 के लिए 31 वें सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है। और इस पुस्तक का प्रकाशन वर्ष 2015 में हुआ था।
8. "नॉट जस्ट ए नाईटवॉचमैन : माई इनिंग्स विद BCCI" पुस्तक के लेखक विनोद राय है। यह पुस्तक विनोद राय ने लिखी है।
9. "बिरसा मुंडा –जनजाति नायक" पुस्तक के लेखक आलोक चक्रवाल है।
10. "पूर्वी भारत का सिख इतिहास" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहपात्रा है। इस पुस्तक में बिहार, असम, बांग्लादेश, पश्चिम बंगाल , ओड़िसा, अरुणाचल प्रदेश , सिक्किम और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का सिख इतिहास शामिल है।
11. "द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा है। कॉफी टेबल बुक ""द मैजिक ऑफ मंगलाजोड़ी" पुस्तक के लेखक अविनाश मोहापात्रा है। इस पुस्तक में विभिन्न छवियों और विवरणों के माध्यम से चिल्का झील में मंगलाजोड़ी का एक विहंगम दृश्य प्रदान करती है।
12. "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक के लेखक हरिश मेहता है। "द मेवरिक इफेक्ट" पुस्तक अनकही कहानी बताती है की कैसे 1970 और 80 के दशक में एक बैंड ऑफ ड्रीमर ने NASSCOM बनाने और भारत में आईटी क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए हाथ मिलाया।
13. "टाइगर ऑफ द्रास : कैप्टन अनुज नैयर, 23 कारगिल हीरो" पुस्तक के लेखक मीना नैयर है। इस पुस्तक में कैप्टन अनुज नैयर (23 वर्ष) की कहानी है। जो 1999 के कारगिल युद्ध के दौरान द्रास सेक्टर को सुरक्षित करने के लिए लड़ते हुए शहीद हुए थे। कैप्टन अनुज नैयर को 2000 में दूसरे सर्वोच्च वीरता पुरस्कार महावीर चक्र (मरणोपरांत) से सम्मानित किया गया था।
14. "डिकोडिंग इंडियन बाबूडोम" पुस्तक के लेखक अश्विनी श्रीवास्तव हैं।
15. "द बॉय हू रोट ए कॉन्स्टिट्यूशन ए प्ले फॉर चिल्ड्रन ऑन ह्यूमन राइट्स " पुस्तक के लेखक राजेश तलवार हैं।
16. अनफिल्ड बैरल्स : इंडियाज ऑयल स्टोरी " पुस्तक के लेखक ऋचा मिश्रा है।
17. "द लिटिल बुक ऑफ जॉय" पुस्तक के लेखक दलाई लामा और डेसमंड टूटू है।
18. "उड़ान एक मजदुर बच्चे की " पुस्तक के लेखक मिथिलेश तिवारी है।
19. द मिलेनियल योगी " पुस्तक के लेखक दीपम चटर्जी है।
20. मोर देन जस्ट सर्जरी : लाइफ लेसन्स बियॉन्ड द ऑटो पुस्तक के लेखक डॉ. तेहमटन एराच उडवाडीया है।
21. "ऑन बोर्ड : माई इयर्स इन बीसीसीआई" आत्मकथा के लेखक रत्नाकर शेट्टी है।
22. "उंगलिल ओरुवन" एमके स्टालिन की आत्मकथा है।
23. "द क्वीन ऑफ इंडियन पॉप : द ऑथराइज्ड बायोग्राफी ऑफ उषा उत्थुप" जीवनी के लेखक विकास कुमार झा है।
24. द ब्लू बुक : ए राइटर्स जर्नल पुस्तक के लेखक अमिताव कुमार है।
25. "ए लिटिल बुक ऑफ इंडिया : सेलिब्रेटिंग 75 इयर्स ऑफ इंडिपेंडेंस" पुस्तक के लेखक रस्किन बॉन्ड है।
26. "फियरलेस गवर्नेंस पुस्तक के लेखक डॉ. किरण बेदी है।
27. "अटल बिहारी वाजपेयी नामक पुस्तक के लेखक सागरिका घोष है।
28. गोल्डन बॉय नीरज चोपड़ा पुस्तक के लेखक नवदीप सिंह गिल है।
29. द ग्रेट टेक गेम पुस्तक के लेखक अनिरुद्ध सूरी है।
30. ऑपरेशन खत्म पुस्तक के लेखक आर सी गंजू और अश्विनी भटनागर है।
31. ए नेशन टू प्रोजेक्ट नामक पुस्तक के लेखक प्रियम गाँधी मोदी है।
32. "ए हिस्ट्री ऑफ श्रीनिकेतन" पुस्तक के लेखक उमा दास गुप्ता है।
33. "डिग्निटी इन ए डिजिटल एज" पुस्तक के लेखक रो खन्ना है।
34. "चाँद पे चाय " पुस्तक के लेखक राजेश तैलंग है।

125.	माय म्यूजिक माय लाइफ	रवि शंकर
126.	टू द लास्ट बुलेट	विनीता कॉम्टे
127.	सींग लाइक ए फेमिनिस्ट	निवेदिता मेनन
128.	कोरा कागज, द रेवेन्यू स्टैम्प, डेथ ऑफ ए सिटी, कागज की केनवास	अमृता प्रीतम
129.	रिटर्न टू इण्डिया	शोभा नारायण
130.	माई कंट्री माई लाइफ	लालकृष्ण आडवाणी
131.	आई फॉलो द महात्मा	के एम मुंशी

साहित्य अकादमी पुरस्कार

पुस्तकें	लेखक	वर्ष
हजार चौरासी की माँ	महाश्वेता देवी	1996
इन्हीं हथियारों से	अमरकान्त	2007
कोहरे में कैद रंग	गोविन्द मिश्रा	2008
मोहनदास	उदय प्रकाश	2010
मिजुलमन	मृदुलागर्ग	2013
हवा में हस्ताक्षर	कैलाश वाजपेयी	2009
रेहान पर एग्घु	काशीनाथ सिंह	2011
विनायक	डॉ.रमेशचन्द्र शाह	2014
पत्थर फेंक रहा हूँ	चन्द्रकान्त देवताले	2012

सरस्वती सम्मान

पुस्तकें	लेखक	वर्ष
कायाकल्प	लक्ष्मीनन्दन बोरा	2008
लफ्जों की दरगाह	सुरजीत पातार	2009
सुगाया कुमारी	मनालेजुथु	2012
फूल पोंधों पर	गोविन्द मिश्रा	2013
इरामा कथाइयुम इरामा याकालु	ए ए मानावलन	2011
रामायण महान्वेषणम	एम.वीरप्पा मोइली	2014
मन्दरा	एस एल भयरप्पा	2010

• ***भारत में सर्वाधिक बड़ा, लम्बा एवं ऊँचा***	
सबसे ऊँचा टी० वी० टॉवर	पीतमपुरा (नई दिल्ली)
सबसे ऊँचा हवाई पत्तन	लेह (लद्दाख)
सबसे लम्बी नदी (भारत में बहने के अनुसार)	गंगा नदी
सबसे लम्बी यात्रा वाली ट्रेन (विद्युत)	राजधानी एक्सप्रेस दिल्ली से कोलकाता
सबसे लम्बी नहर	इंदिरा गाँधी नहर राजस्थान
"सबसे ऊँचा पर्वत शिखर -	गोडविन आस्टिन K-2
सबसे ऊँचा झरना	कुंचीकल (455 मी), कर्नाटक
सबसे ऊँचा दरवाजा	बुलन्द दरवाजा, फतेहपुर सीकरी (आगरा)
सबसे ऊँची मीनार	कुतुबमीनार, दिल्ली
सबसे ऊँचा बाँध	भाखड़ा बाँध (सतलज नदी पर)
सबसे ऊँची मूर्ति	देवताल झील (गढ़वाल)
पर ऊँची झील	ऋषभ देव की मूर्ति (खरगोन, मध्य प्रदेश)
सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफॉर्म	गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
सबसे लम्बा रेल मार्ग	डिब्रूगढ़ से कन्याकुमारी
सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग	7 (वाराणसी से कन्याकुमारी)
सबसे लम्बी तटरेखा वाला राज्य	गुजरात
सबसे लम्बी सहायक नदी	यमुना नदी
सबसे लम्बा पुल	बांद्रा-वर्ली सी-लिंक (5,600)मी. मुम्बई महाराष्ट्र
सबसे लम्बी सुरंग	अटल सुरंग (जम्मू-कश्मीर)
सबसे लम्बी सड़क	ग्रांड ट्रंक रोड़ (g.t. रोड़)

क्लोरीन	शीले
इन्सुलिन	एफ. बैंटिंग
रक्त परिवर्तन	कार्ल लैंडस्टीनर
रक्त परिवहन (संचरण)	विलियम हार्वे
पेनिसिलिन	सर अलेक्जेंडर फ्लेमिंग एण्ड फ्लोरे
हृदय प्रत्यारोपण	क्रिश्चियन बर्नार्ड
इलेक्ट्रॉन	जे.जे. थॉमसन
ओजोन	क्रिस्पियन स्कोनबेन
प्रोटॉन	गोल्डस्टीन
स्ट्रेप्टोमाइसिन	वेक्समैन

- ***भारत के प्रमुख खेल***

राष्ट्रमंडल खेल

❖ राष्ट्रमंडल खेल की कल्पना सन् 1891 में एक अंग्रेज "जे. एस्ले कपूर" ने की थी|
❖ राष्ट्रमंडल खेलों की शुरुआत 1930 ई. में हेमिल्टन (बरमूडा) में हुई थी|
❖ राष्ट्रमंडल खेल का नाम ब्रिटिश साम्राज्य तथा सन् 1954 राष्ट्रमंडल खेल रखा गया |
❖ सन् 1908 के ओलम्पिक के बाद रिचर्ड कूम्बस नामक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक के द्वारा उसके सुझाव को मंजूरी दे दी गई |
❖ 1934ई. में लंदन में होने वाले दूसरे राष्ट्रमंडल खेल में भारत ने पहली बार भाग लिया था |
❖ राष्ट्रमंडल खेल प्रत्येक चार वर्षों पर दो ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक खेलों के बीच में होता है |
❖ राष्ट्रमंडल खेल कभी भी लगातार एक ही देश में नहीं होते हैं |
❖ राष्ट्रमंडल खेल में राष्ट्रमंडल के सदस्य देशों की टीम में भाग ले सकते हैं|

एशियाई खेल

➢ सन् 1947 में नई दिल्ली में एशियाई देशों के सम्मेलन में एशियाई देशों की अन्तर्राष्ट्रीय खेलों की स्पर्द्धा हर चार वर्ष पर आयोजित करने की योजना बनायी गई|
➢ प्रो. जी.डी. सोंढी को इस प्रस्ताव का श्रेय जाता है, जिनका उद्देश्य खेलों के माध्यम से एशियाई देशों को एक-साथ करना था|
➢ एशियाई खेल संघ ने चमकते सूर्य को अपना प्रतीक चिह्न घोषित किया |
➢ पहले एशियाई खेलों की प्रतियोगिता का उद्घाटन 4 मार्च, 1951 को नई दिल्ली में हुआ था |

क्रिकेट

❖ क्रिकेट खेल की उत्पत्ति दक्षिण-पूर्वी इंग्लैण्ड में हुई मानी जाती है |
❖ इंग्लैण्ड मेलबर्न क्रिकेट क्लब की स्थापना 1787 ई. में हुई |
❖ भारत में कलकत्ता क्रिकेट क्लब की स्थापना 1792 ई. में हुई |
❖ इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल की स्थापना इम्पीरियल कॉन्फ्रेंस के रूप में 1909 ई. में हुई थी, जिसे बाद में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस नाम दिया गया |
❖ खिलाड़ियों की संख्या 11 होती है |

❖ **राष्ट्रीय खेल**- 1. इंग्लैण्ड , 2. ऑस्ट्रेलिया |
❖ **माप – 1.** पिच की लम्बाई 22 गज
❖ **2.** बॉल- 155.9 ग्राम से 163 ग्राम,
❖ **3.** बल्ला- लम्बाई 96.5 सेमी., चौड़ाई अधिकतम 10.8 सेमी. ,
4. पिच- 20.12 मीटर

○ ***विश्व कप क्रिकेट -***

क्र. सं.	**वर्ष**	**मेजबान देश**	**विजेता**	**उपविजेता**
1.	1975	इंग्लैण्ड	वेस्टइंडीज	ऑस्ट्रेलिया
2.	1979	इंग्लैण्ड	वेस्टइंडीज	इंग्लैण्ड
3.	1983	इंग्लैण्ड	भारत	वेस्टइंडीज
4.	1987	भारत-पाकिस्तान	ऑस्ट्रेलिया	इंग्लैण्ड

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNIc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/6ypqrr

Online order - https://bit.ly/3li2feg

Call करें - 9887809083